एक ऐसा भी समय और जमाना था जब व्यवसाय के चुनाव का प्रश्न ही नहीं उठता था। इसका निर्णय जन्म के साथ ही अपने आप हो जाता था। जो जिस परिवार में जन्म में जन्म लेता था, उस परिवार का धंदा या व्यवसाय ही उकस व्यवसाय हो जाता था। इस प्रकार किसान का बेटा किसान बनात था और कुम्हार का बेटा कुम्हार। व्यापारी घराने में पैदा होने वाला लड़का निश्चिम रूप से व्यापारी ही बनता था। शिक्षक और पुजारी की संतान शिक्षक और पुजारी ही बनती थी। इस प्रकार व्यवसाय जन्मजात होते थे। बच्चे को उसके व्यवसाय की शिक्षा अपने घर-परिवार में ही मिलने लगती थी और उस समय स्त्रियाँ तो बस न कोई व्यवसाय करती थीं। उनमें स्वतंत्रता, खुलेपन और अपने-आप निर्णय लेने का नितांत अभाव था।

आज समय बिलकुल बदल गया है। चारों और उदारता, खुलापन स्वंतत्रता और इच्छानुसार चुनाव का वातावरण है। लड़कियों और महिलाएँ पुरुषों के साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर आगे बढ़ रही हैं। पुरुषों के समान ही अधिकार प्राप्त है। वे जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं। कोई ऐसा व्यवसाय नहीं है जो उनकी पहूँच के बाहर हो। उन्हें व्सवसाय करने, धन कमाने और जीवन में प्रगति करने की पूरी छूट है और आवश्यकता भी। नारी अब न अबला है और न असहाय। अत: व्यवसाय का चुनाव उनके लिए भी आवश्यक हो गया है। संसार की आधी संख्या स्त्रियों और लड़कियों की है। इस अपार जनशक्ति की अब और अवहेलना संभव नहीं है। हर एक व्यक्ति को अपने व्यवसाय को चुनना पड़ेगा।